## संक्षेपणक अभ्यास

1

हम अपन भाषा आओर साहित्यसँ अनुराग करी से सर्वथा उचित । अपन पूर्वजक कृतिकेँ सुरक्षित राखी सेहो उचित । ओकरा प्रति गौरव स्वभाविक । परन्तु, हमर आओरो कर्त्तव्य अछि । केवल भाषाक रक्षा कर्त्तव्य नहि, एकर उन्नति हो, एहिमे उच्च कोटिक साहित्यक दिनानुदिन सृष्टि हो, सर्वसाधारणमे एकर शुद्ध रूपमे प्रचार हो सेहो हमर कर्त्तव्य थिक । काज कयनिहारक संख्या तँ सभ संस्थामे थोड़बे होइत छैक, परन्तु आवश्यकता अछि तत्परताक, उत्साहक, अनवरत परिश्रमक । आवश्यकता अछि मुद्रणार्थ धनक, सफलतार्थ ग्राहकक, प्रान्तीय शिक्षा-विभागसँ सहयोगक, विश्वविद्यालयक कृपा-दृष्टिक, आवश्यकता अछि जनकतनयाक अनुकम्पाक ।

2

अति प्राचीन कालहिसँ मिथिला बौद्धिक एवं आध्यात्मिक क्षेत्रमे सम्पूर्ण भारतवर्ष मे प्रसिद्ध रहल अछि । एक दिस जँ दर्शनशास्त्रक गूढ़ रहस्यक प्रतिपादन होइत छल तँ दोसर दिस कर्मयोगक अभ्यास । ऋषि लोकनि तपस्यामे लीन रहैत छलाह । जनसाधारण अन्न-फल-फूलक उत्पादन कऽ एहि भूभागकेँ शस्य-स्यामला बनौने रहैत छल । एक दिस वेदाभ्यास होइत छल तँ दोसर दिस तत्त्वचिन्तन । इएह ओ मिथिला अछि जाहिठाम बुद्ध उत्पन्न भऽ अपन अमर वाणीसँ विश्वक संतृप्त मानवताकेँ चिरशांतिक मार्गक दर्शन करौने छलाह । यद्यपि मिथिला भगवान बुद्धक कर्मक्षेत्र छल तथा वैशाली बौद्ध धर्मक प्रधान केन्द्र । मिथिलावासी बौद्ध धर्मसँ प्रभावित तँ नहिएँ छलाह तेँ ओकर प्रत्यक्ष आलोचना सेहो करैत छलाह । ह्वेनसांगक यात्रा-वृत्तान्तसँ स्पष्ट होइछ जे सातम शताब्दीमे हर्षवर्द्धन साम्राज्यक ई अङ्ग छल ।

3

हिमालयसँ कन्याकुमारी धरिक जे भू-भाग भारत राष्ट्रक नाम पर अवशेष रहि गेलैक अछि तकरो विच्छिन्न भऽ जयबाक आशंका दिनानुदिन बढ़ले जा रहल छैक । प्रत्येक

प्रान्त, जनपद, जनसमुदाय, भाषा आदिकेँ मूलतः भारत राष्ट्रसँ भिन्न स्वतंत्र रूपमे उत्थापित करबाक प्रच्छन्न षडयन्त्र चलि रहल छैक । किन्तु जाहि इकाइ सभकेँ एना ठाढ़ कयल जाइत छैक से सभ की निरपेक्ष इकाइ थिक ? की, कोनो एहन सबल सूत्र नहि छैक जे एकरा सभकेँ जोड़ैत होइक ।

4

सामान्यतः विधिवत् लोकगीत सिखबाक आवश्यकता ककरो नहि छैक । संगहि ओकरा सिखबाक अथवा सिखयबाक लेल कोनो विद्यालय अथवा शिक्षक नहि भेटैत छथि । कोना एहि सभक रचना कयल जाइछ, कोना ई सभ स्मरण राखल जा सकैत छैक अथवा कोना स्वर-तालादि सीखय पड़त एकर ज्ञानक लेल विधिवत् प्रणाली नहि होइत छैक । कुतूहल तथा आनन्दक वशीभूत भऽ लोक केवल कानहिसँ सुनि कऽ ई सभ सीखि लैत छथि । एहिमे हुनक सहज प्रवृत्तिक रागात्मक योग होइत छनि । ई लोकगीत जन-मनक विस्तृत नभोमण्डलमे हल्लुक सतरंगा मेघा जकाँ थिरकैत रहैत अछि । धरतीक तृष्णा-निवारणक लेल जाहि प्रकारेँ सरस जलद जल बरिसाबैछ, ताहि प्रकारेँ सर्वजन हृदयमे रसक आलोड़न होयबाक कारणेँ एकर सहज विकास होमय लगैछ ।

5

राष्ट्रक एक-एक अंगक व्याख्या करब तँ ओहिमे देहक स्थान भेटतैक भूमिकेँ । भूमि वस्तुतः राष्ट्रक दैहिक आकार थिकैक । जहिना मनुष्यक देह होइत छैक तहिना भूमि सेहो राष्ट्रक देह थिकैक किन्तु प्राणक अभावमे देह निष्क्रिय रहैत छैक । प्राण रहने ओ क्रियाशील एवं जीवन्त रहैत छैक । राष्ट्रोक प्राण थिकैक ओहि भूमिक निवासीजन । देह ओ प्राणक अछैत वाक्केर अभावमे मनुष्य अकार्यक रहैत अछि । ओ अपन अनुभूति, अपन भावना, अपन कल्पना, अपन कामना प्रकट नहि कऽ सकैछ । ओकर इच्छा ओ आकांक्षा पाथर तरमे दबल दूबि जकाँ म्रियमाण भऽ जाइत छैक । राष्ट्रक सम्बन्धमे इएह कहल जा सकैछ । राष्ट्रक वाक् वा वाणी थिकैक ओकर भाषा, साहित्य एवं कला । निजी भाषा, साहित्य ओ कलाक अभावमे ओ सर्वथा मूक रहत। देह, प्राण ओ वाक्-एहि तीनूक संग सभसँ आवश्यक अछि आत्माक अवस्थिति । शरीरे जकाँ राष्ट्रोक हेतु आत्मा अपेक्षित छैक । राष्ट्रक आत्माक परिचय प्राप्त कयल जा सकैछ । ओही आत्माक स्वर, साहित्य एवं कलामे अभिव्यक्ति तथा मुखर होइत छैक। अतः उपर्युक्त तत्त्व सभक समुच्चये राष्ट्र थिक । एहि तत्त्व सभक समन्वित भेले पर

राष्ट्रक अभिधान सार्थक होइत अछि । एहिमेसँ एकोटाक अभावमे राष्ट्रक यथार्थ स्वरूपक कल्पना नहि कयल जा सकैछ ।

6

समीक्षा-वृत्तिक भिन्न-भिन्न प्रकार साहित्यशास्त्रीक मध्यमे प्रसिद्ध अछि- सबसँ निम्नकोटिक समीक्षक '**काकवृत्ति**' कहबैत छथि जे कौआ जकाँ केवल कटु कथा कहैत छथि, जनिक दृष्टि केवल मल वा दोषहि पर जाइत अछि । एहिसँ उत्कृष्टतर थिकाह ओ जे सर्वदा अपने दलक रीति नीतिकेँ श्रेष्ठतम मानैत अछि ओ दोसराकेँ अधलाह बूझि हुनका हानि पहुँचाय केवल अपन वा अपन दलक मतक स्वार्थपूर्ण पोषण करैत छथि । एहि प्रकारक समीक्षक "**कोकिलावृत्ति**" थिकाह, कारण, कोकिल अपन गेल्हक पोषण करयबाक निमित कौआक अंडाकेँ खसाय दैत छैक । वर्गवादी अर्थात् वर्गविशेषक समर्थन मात्र जे समीक्षाक मुख्य लक्ष्य मानैत छथि से एही श्रेणीक थिकाह । तेसर श्रेणी थिक "**मधुकरवृत्ति**" बलाक जे सब विकसित फूल पर बैसि-बैसि ओकर रस ग्रहण करैत छथि तथा दोसराकेँ पान करयबाक निमित ओहि रससँ मधु बनबैत छथि । एहन समीक्षक गुणग्राहक गुणदर्शी अभिप्रशंसक होइत छथि जे सब रचनासँ केवल गुणे गुण बहार कऽ ओकरा सभक समक्ष एहि रूपेँ उपस्थित करैत छथि जे लोक ओहिसँ लाभान्वित हो तथा स्थापित वस्तु स्वयं अपनामे नवीन, सुन्दर, हितकर भऽ जाय । एकरहि दृष्टिमे राखि भट्टनारायणक उक्ति अछि जे 'मधुकर इव मधुविन्दून विरलानपि भजत गुणलेशान्' । परन्तु सबसँ उत्कृष्ट थिकाह "**हंसवृत्ति**" जे निष्पक्ष निर्णायक भऽ सब प्रकारक पक्षपातसँ पृथक् रहि दूधकेँ दूध ओ पानिकेँ पानि बहार कऽ कहि दैत छथि, प्रत्येक रचनाक गुणदोषकेँ अत्यन्त विशद ओ स्पष्ट रूपसँ व्यक्त कऽ लोकक सम्मुख उपस्थित कऽ दैत छथि, जाहिसँ लोक गुणक ग्रहण कऽ लेअय तथा अवगुणसँ सावधान भऽ ओकरा त्यागि देअय । समीक्षाक एही उच्च आदर्शकेँ ध्यानमे राखि तँ हमरालोकनि हंसकेँ वैदुष्यक प्रतीक मानैत आयल छी ओ हंसकेँ सरस्वतीक वाहन कहैत छियैनि ।

## पत्र-लेखन

पत्र दू हृदयकेँ जोड़यवला सेतु थिक जाहिसँ हम एक दोसराक विचार आ समाचारसँ परिचित होइत छी । निश्चल भाव आ विचारक आदान-प्रदान पत्रहि द्वारा संभव अछि । पत्र लेखन दू व्यक्तिक बीच होइत अछि जकरा द्वारा दू हृदयक सम्बन्ध दृढ़ होइत अछि । पत्र प्रेषित कऽ वा पाबि कऽ सुदूर रहनिहार व्यक्तिसँ निकटताक बोध होइछ ।

पत्र संवाद-प्रेषणक सभसँ प्राचीन, सशक्त आ लोकप्रिय माध्यम रहल अछि । मनुष्यकेँ लेखन ज्ञान जहिया भेल हेतैक प्राय: तहिएसँ संवाद पठेबाक परम्परा प्रारम्भ भेल हेतैक ।

संचार-क्रान्तिक एहि स्वर्णिम युगमे पत्राचारक महत्ता कम नहि भेलैक अछि । पत्र लिखबाक समय सावधान रहब उचित थिक । कारण संबंध प्रगाढ़ करबामे वा बिगाड़बामे पत्रक विशेष महत्ता अछि ।

पत्रक उद्देश्य विभिन्न होयबाक कारणेँ पत्रक विषय भिन्न-भिन्न होइछ । एहि कारणसँ विषयक आधार पर पत्रक तीन भेद कयल जाइछ–

1. व्यक्तिगत पत्र
2. व्यावसायिक पत्र
3. कार्यालयीय पत्र

1. **व्यक्तिगत पत्र**–जाहि पत्रमे कोनो व्यक्ति विशेषसँ सम्बन्ध रखनिहार विषयक उल्लेख होअय, तकरा व्यक्तिगत पत्र कहल जाइछ । एहि तरहक पत्र सम्बन्धी, मित्र तथा परिचित व्यक्तिकेँ लिखल जाइछ, यथा–पिता, पुत्र, पुत्री, माता, भाइ, मित्र आदि । एहि प्रकारक पत्रक कतेक रूप प्रचलित अछि । यथा- सम्बन्धीक पत्र, बधाइ पत्र, शोक पत्र, निमंत्रण पत्र आदि ।

व्यक्तिगत पत्रक निम्न भाग होइछ :-

i. पत्र पठबयवलाक पता, तिथि, पत्रक आरंभमे उपर दहिना भाग लिखल जयबाक चाही । यथा : –

शास्त्रीनगर, पटना
8 मइ, 2008

ii. संबोधन, अभिवादन बामा हाथ दिश लिखल जाइछ । अपनासँ पैघकेँ आदरणीय, पूजनीय आदि आदरसूचक शब्दक बाद संबंध लिखल जाइछ । यथा- आदरणीय पिताजी, अपना सँ छोटकेँ प्रिय वा प्यारीक नीचा आशीर्वाद लिखल जाइछ । सम्बोधनक शब्द आगाँ तालिकामे देल गेल अछि ।

iii. अभीष्ट विषयकेँ अभिवादनक उपरान्त प्रारम्भ करक चाही । पत्रक भाषा शिष्ट, संक्षिप्त एवं स्पष्ट होयबाक चाही । विषयक समापन सम्बन्धक भाव प्रगट करैत होयबाक चाही ।

iv. पत्रक अंतमे दहिना दिश पठबयवला अपन परिचय दैत हस्ताक्षर करथि आ बामा भाग जिनका पत्र पठयबाक हो हुनक नाम आ पता लिखबाक चाही ।

v. पोस्टकार्ड, अन्तर्देशीय पत्र वा लिफाफ पर प्रेषितीक पता सुस्पष्ट शब्दमे लिखनाक चाही । प्रथम पाँतीमे हुनक नाम आदरसूचक शब्दमे लिखबाक बाद दोसर पाँतीमे मकान सं., ग्राम, मोहल्ला, गलीक नाम आ तकरा बाद डाकघर, जिला, प्रदेश लिखबाक चाही । पिन कोड अन्तमे लिखब आवश्यक ।

## सम्बोधन/अभिवादनक शब्द तालिका

| | सम्बोधन | अभिवादन | समापन |
|---|---|---|---|
| पैघ केँ | पूज्य, पूजनीय, परमपूज्य, पूज्यवर, मान्यवर, माननीय, आदरणीय, श्रद्धेय, श्रद्धास्पद, पूज्या, आदरणीया (स्त्री) आदि । | प्रणाम, सादर प्रणाम चरणस्पर्श, आदि । | आज्ञाकारी, कृपाकांक्षी भवदीय, विनीत, स्नेहभाजन स्नेहाधीन, अपनेक, अहीँक, आज्ञाकारिणी, कृपाभिलाषिणी (स्त्री) आदि । |
| छोट केँ | प्रिय, चिरंजीवी, आयुष्मान्, आयुष्मती (स्त्री) आदि । | आशीर्वाद, शुभाशीष शुभ आशीर्वाद आदि । | तोहर, शुभचिन्तक, शुभाकांक्षी शुभेच्छु आदि । |

| | सम्बोधन | अभिवादन | समापन |
|---|---|---|---|
| मित्र कें | प्रिय मित्र, प्रियवर, बन्धुवर सुहृदवर, प्रिये(स्त्री) आदि । | नमस्कार आदि । | तोहर, अहाँक, भवदीय, हितैषी आदि । |
| पति | प्रिय, प्राणनाथ, हृदयेश्वर कें प्रियवर, प्रियतम आदि | सादर प्रणाम आदि । | प्रिया, सेविका, सहचरी, सँगिनी आदि । |
| पत्नी कें | प्रिये, प्राणेश्वरी, हृदयेश्वरी प्रियतमे, आदि । | अहाँक स्नेही, प्रियतम अहाँक, अपनहिक आदि । | तोहर आदि । |
| अपरिचित कें | महाशय, महोदय, महाशया महोदया (स्त्री) आदि । | नमस्कार, यथोचित आदि । | अपनेक, भवदीय, भवदीया, शुभचिन्तक, आदि । |

## व्यक्तिगत पत्रक किछु उदाहरण

### पिताक नाम पत्र

शास्त्रीनगर, पटना

ता. 8-5-2008

पूज्य पिताजी,

सादर प्रणाम ।

हम कुशलसँ छी आ अपनेक कुशलता ईश्वरसँ सदा मनबैत रहैत छी। आगाँ समाचार अछि जे फरवरी महीनामे हमर बोर्डक परीक्षा होयत । परीक्षाक तैयारी प्रारम्भ कऽ देलियैक अछि । आन्तरिक परीक्षामे नीक अंक आयल अछि । परीक्षाक तैयारीक लेल किछु सन्दर्भ-पोथीक आवश्यकता होयत । तेँ पोथी कीनबाक लेल

कृपा कऽ 1000/- टाका पठा देल जाय । अपनासँ पैघकेँ प्रणाम आ छोटकेँ आशीर्वाद । गाम-घरक समाचार लिखब । विशेष कुशल ।

अहाँक आज्ञाकारी पुत्र

आशुतोष

टिकट

प्रेषक :-
.....
.....
.....
.....
.....

सेवामे :-
श्री.....
ग्राम.....
पो. .....
जिला.....
.....

## मित्रकेँ पत्र

नई दिल्ली

31 जनवरी, 1994

प्रिय बुधनजी,

सप्रेम नमस्कार ।

अहाँक पत्र प्राप्त भेल । संगहि अहाँक उत्कृष्ट उपलब्धिक समाचारसँ गौरवान्वित भेलहुँ । आशा अछि, अहाँ अहिना प्रगतिशील रहब । डॉ. रूपनारायण बाबू आयल रहथि एवं अहाँ ओ डॉ. विपिन झाजीक चर्चा करैत रहथि । मौका भेटत तँ अहाँक पी-एच. डी. क कृति पढ़ब ।

शुभेच्छु

सतेन्द्र

टिकट

प्रेषक :-
.....
.....
.....
.....
.....

सेवामे :-
श्री.....
ग्राम.....
पो. .....
जिला.....
.....

## निमंत्रण पत्र

मिथिलाक प्राचीन प्रथाक अनुसार मिथिलाक्षर वा कैथी लिपिमे लिखल नोत-पाता, विवाह, मुण्डन, उपनयन, यज्ञ, श्राद्ध, गृह-प्रवेश आदिक अवसर पठाओल जाइत छल । परन्तु आब संचार क्रान्तिक युगमे नव-स्वरूपक पत्र (कार्ड) प्रचलित अछि ।

विवाह अवसर पर लिखल पत्र ।

पृष्ठ-1

॥ ॐ ॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

मंगलं भगवान् विष्णुः मंगलं गरुडध्वजः ।

मंगलं पुण्डरीकाक्षः मंगलाय तनोहरिः ॥

वैवाहिक कार्य-विवरण

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

पृष्ठ-2

मान्यवर,

अपनेकेँ सूचित करैत अपार हर्ष भऽ रहल अछि जे परमपिता परमेश्वरक असीम अनुकम्पासँ हमर ज्येष्ठ पुत्र आयुष्मान् अवधेश कुमार, आत्मज सुरेश मंडल, ग्राम+पो. रामनगर, जिला-सुपौलक पावन परिणय आयुष्मती कुमारी

अनुजा, आत्मजा-श्री हरीश चन्द्र ग्राम+पो. पूर्णियाँ, जिला- पूर्णियाँ, सँ शुभ तिथि 17/4/2008 कऽ होयब निश्चित भेल अछि । अत: अपनेसँ प्रार्थना अछि जे अपने एहि मांगलिक वेलामे दिनांक 25.4.08 कें आयोजित वर-वधूक स्वागत समारोह एवं प्रीतिभोजमे सपरिवार उपस्थित भऽ अनुगृहीत करी ।

दर्शनाभिलाषी,

आकांक्षी, शिशिर चन्द्र, उमेश, रंजन, राहुल

सुरेश मंडल एवं समस्त परिवार ।

## शोक पत्र

### (क)

मान्यवर,

विषादक संग अपनेकें सूचित करबाक अछि जे हमर पूज्य पिताजीक देहावसान विगत 1/5/08 कें भऽ गेलनि । हुनक पार्थिव शरीरक दाह-संस्कार बाँसघाट, पटनाक विद्युत शव-दाह गृहमे सम्पन्न भेलनि । तदनुसार एकादशा एवं द्वादशाक भोज-कर्म मे सम्मिलित भऽ कृतार्थ करी ।

एकादशा - दिनांक 12/5/08 (सायं 6 बजे)

द्वादशा - दिनांक 13/5/08 (सायं 7 बजे)

भोज-स्थल - शास्त्रीनगर, पटना

निवेदक,

टुन्ना चौधरी

(ख)

नौबतपुर
दिनांक 9/5/2008

प्रिय टुन्नाजी,

नमस्कार ।

अपनेक पिताक आकस्मिक मृत्युक समाचार सुनि एतेक दुःख भेल जे ओकरा शब्दमे नहि व्यक्त कऽ सकैत छी । हुनक मृत्यु वज्राघात थिक । विधाता जेना चाहैत छथि, ओएह होइत छैक । किनका संग कोन घटना घटि जायत से के कहत ! जन्म-मरण तँ लगले रहैत छैक ।

हम एहि दुःखक घड़ीमे संवेदना प्रगट करैत छी आ ईश्वरसँ प्रार्थना करैत छी जे ओ अहाँकेँ एहि दुखकेँ सहबाक शक्ति देथि तथा दिवंगत आत्माकेँ शान्ति भेटनि ।

अहाँक
देव कुमार

बधाइ-पत्र

मधुबनी,
दिनांक 9/5/2008

ई जानि हार्दिक प्रसन्नता भेल जे तोँ इंटरमीडिएट परीक्षा प्रथम श्रेणीमे पास कयलह, ताहि लेल बधाइ । आशा अछि भविष्यमे एहिना सफलता प्राप्त करैत रहबऽ। बी. ए. मे नामांकन शीघ्र करा सूचित करिहऽ । भविष्यमे जखन कखनो हमर सहयोगक अपेक्षा होयतह, हम सदिखन उपलब्ध रहबऽ ।

शुभचिन्तक
उपेन्द्र

आवेदन-पत्र

आवेदन पत्रमे निम्नांकित बात पर ध्यान देबाक चाही :-

1. आवेदन पत्रक ऊपरी भागमे बामा हाथ दिस पद सहित प्रेषितीक नाम आ पता लिखब आवश्यक ।
2. संबोधनक लेल महोदया / महोदय लिखब आवश्यक ।
3. अन्तमे अपन नाम लिखबासँ पूर्व कृपाभिलाषी, कृपाकांक्षी, आज्ञाकारी, विनीत, भवदीय, विश्वासभाजन लिखलाक बाद नीचाँ तारीख आ पता लिखब आवश्यक ।

## अवकाशक लेल आवेदन

सेवामे

प्राचार्य महोदय,

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,

शास्त्रीनगर, पटना ।

विषय : दिनांक 10/5/08 सँ 15/5/08 धरि आकस्मिक अवकाशक स्वीकृति हेतु ।

महाशय,

सविनय निवेदन अछि जे ज्वरसँ पीड़ित रहबाक कारण हम दिनांक 10/5/2008 सँ 15/5/2008 धरि विद्यालयक सेवा करबामे असमर्थ छी ।

अत: उक्त अवधिक लेल आकस्मिक अवकाशक स्वीकृति प्रदान कऽ कृतार्थ करी ।

भवदीय,

दिनांक- 9/5/2008

सूरज कुमार

प्रयोगशाला सहायक

## व्यावसायिक-पत्र

एहि प्रकारक पत्रमे निम्न बिन्दु पर ध्यान देब आवश्यक :-

1. पत्रकेँ ऊपर व नीचाँ बामा भागमे पत्र प्राप्तिकर्त्ताक नाम् आ पता लिखब आवश्यक ।
2. जँ पत्र दू व्यावसायिक संस्थाक बीच होअय तँ प्रेषकक नाम-पता पहिने लिखि कऽ तिथि लिखक चाही आ प्रेषितीक नाम-पता लिखब आवश्यक ।
3. सम्बोधनक लेल महाशय, महोदय, प्रिय महोदय लिखब आवश्यक ।
4. आब अभिवादन लिखबाक प्रवृत्ति कम भेल जा रहल अछि ।

## पुस्तक मँगयबाक पत्र

सेवामे

प्रबन्धक,

भारती भवन, पटना ।

विज्ञान, कला, वाणिज्य संकायक 12 म कक्षाक हेतु भारती भवन द्वारा प्रकाशित पुस्तकक हजार-हजार प्रति निम्न पता पर पठेबाक कृपा कयल जाय । एतदर्थ 50000/- टाकाक बैंक ड्राफ्ट संलग्न अछि ।

भवदीय

ह:- ×

छात्र पुस्तक भण्डार,
मधुबनी

## कार्यालयीय पत्र

कार्यालयीय पत्रमे निम्न बिन्दुपर ध्यान राखब आवश्यक ।

1. सबसँ ऊपर पत्रक संख्या देल जाय ।
2. तत्पश्चात् नीचाँ पत्र-प्रेषक कार्यालयक उल्लेख आवश्यक ।
3. ओकरा बाद प्रेषकक नाम एवं पद लिखल जयबाक चाही ।
4. तकर बाद प्रेषितीक नाम, पद आ पता लिखब आवश्यक ।

5. पुनः प्रेषकक पता आ दिनांक लिखल जाय ।

6. ओकर बाद पृष्ठक बीचमे विषयक उल्लेख कयल जाय । जतऽ पत्रक सारांश एक वाक्यमे लिखल जयबाक चाही ।

7. तत्पश्चात् पत्रक प्रारम्भमे बामा दिस संबोधन लिखल जाय ।

8. सम्बोधनक बाद पत्र प्रारम्भ करैत पूर्व पत्र व्यवहारक उल्लेख कयल जाय ।

9. पत्रक अन्तमे अपन निर्देश आ ओकर नीचाँ हस्ताक्षर होयबाक चाही ।

पत्रांक- 3 एम- 2/6/12/99

वित्त विभाग

बिहार सरकार

प्रेषक : अशोक कुमार सिंह

सरकारक उप-सचिव

सेवामे

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)

वीरचन्द्र पटेल पथ, बिहार, पटना

विषय : **राज्यकर्मीक अवकाश रियायती यात्राक सुविधाक संबंधमे ।**

महाशय,

निर्देशानुसार उपर्युक्त विषयक संबंधमे कहबाक अछि जे भारत सरकारक कार्मिक लोक शिकायत एवं पेंशन मंत्रालयक कार्यालय आदेश सं. 31011/3/2001 (ए) दिनांक 2/3/2001 क द्वारा रियायती अवकाश यात्राक सुविधाकेँ दिनांक 2/3/2001 क प्रभावसँ दू वर्षक लेल स्थगित कऽ देबाक निर्णयक पश्चात् राज्य सरकार द्वारा सेहो उपर्युक्त सुविधा स्थगित कऽ देल गेल छल ।

भारत सरकारक कार्यालय ज्ञापांक सं. 310011/3/2001 स्था (ए) दिनांक 13/3/2003 द्वारा केन्द्रीय कर्मीक लेल रियायती अवकाश यात्राक सुविधा पुनः बहाल कऽ देल गेल अछि ।

राज्य सरकार द्वारा सम्यक् विचारोपरान्त राज्यकर्मीकेँ दिनांक 1/4/2005 क प्रभावसँ रियायती अवकाश यात्राक सुविधा पुनः प्रारम्भ करबाक निर्णय लेल गेल

अछि । राज्यक सभ सरकारी सेवककेँ वित्त विभागक पत्रांक 4252 दिनांक 2/2/2000 क निहित शर्तक अधीन रियायती अवकाश यात्राक सुविधा अनुमान्य होयत ।

विश्वासभाजन

ह.

(अशोक कुमार सिंह)

सरकारक उपसचिव

ज्ञापांक 3 एम 2/5/ भत्ता- 12/99 खण्ड 1776 दिनांक 2/4/2005 ।

प्रतिलिपि- सभ विभाग / सभ विभागाध्यक्ष/ सभ जिला पदाधिकारी / सभ आरक्षी अधीक्षक / सभ कोषागार / उप कोषागार पदाधिकारीकेँ सूचना एवं आवश्यक कार्यार्थ प्रेषित ।

## प्रश्न ओ अभ्यास

1. अपन जन्म-दिन पर अथबा लेल अपन मित्रकेँ आमंत्रित कऽ पत्र लिखू ।
2. छोट-भायकेँ एक पत्र लिखू जाहिमे ओकरा समयक सदुपयोग करबाक सुझाव हो ।
3. अपन पिताजीकेँ पत्र लिखि परीक्षाक पश्चातक अपन कार्यक्रमक विवरण दिअऽ ।
4. अपन मित्रकेँ पत्र लिखि ओकरा अपन जीवनक भावी रणनीतिक विवरण दियौक ।
5. प्राचार्यकेँ पत्र लिखि अन्य विद्यालयसँ क्रिकेट मैच खेलबाक अनुमति माँगू ।
6. अपन बहिनक विवाहमे व्यस्त रहबाक निमित्त अपन विद्यालयक प्राचार्यकेँ चारि दिनक अवकाशक लेल प्रार्थना पत्र लिखू ।
7. प्राचार्य महोदयकेँ एक चरित्र प्रमाण-पत्र देबाक अनुरोध करैत आवेदन-पत्र लिखू ।
8. बैंकमे बचत खाता खोलबाक लेल बैंक मैनेजरक नामे पत्र लिखू ।
9. पटना नगर निगमक स्वास्थ्य अधिकारीकेँ एक पत्र लिखि हुनकासँ अपन मुहल्लाक सफाइ करयबाक अनुरोध करू ।